Class 10 Hindi Kshitij Chapter 2: राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (Ram Lakshman Parshuram Samvad) – Notes, प्रश्न-उत्तर और MCQs (2026-27)

ये Ram Lakshman Parshuram Samvad Class 10 notes (राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद) CBSE कक्षा 10 हिंदी क्षितिज भाग 2 के दूसरे पाठ को पूरी तरह कवर करते हैं। इसमें तुलसीदास का परिचय, शिव-धनुष भंग के बाद का पूरा प्रसंग, लक्ष्मण के व्यंग्य, परशुराम का क्रोध, पात्रों का चरित्र-चित्रण, काव्य-सौंदर्य, NCERT प्रश्न-उत्तर, 10 MCQs और मुफ़्त PDF दिया गया है।

नीचे दी गई विषय-सूची से सीधे अपने ज़रूरी भाग पर जाएँ, या पूरे पाठ की तैयारी के लिए शुरू से अंत तक पढ़ें।

विषय-सूची (Table of Contents)

- पाठ परिचय (Chapter Overview)
- मुख्य बिंदु और व्याख्या (Important Points)
- पात्रों का चरित्र-चित्रण
- काव्य-सौंदर्य (Kavya Saundarya)
- लक्ष्मण की व्यंग्य-पंक्तियाँ और उनका अर्थ
- शब्दार्थ (Word Meanings)
- लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)
- दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)
- बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs with Answers)
- त्वरित पुनरावृत्ति (Quick Revision)
- सारांश (Summary)
- परीक्षा टिप्स (Exam Tips)
- अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)
- निष्कर्ष (Conclusion)

सभी पाठों के नोट्स चाहिए? Nextoper पर पूरे Class 10 Hindi notes देखें – क्षितिज, कृतिका, स्पर्श और संचयन, पाठ-वार।

पाठ परिचय (Chapter Overview)

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म 1532 ई. में बाँदा ज़िले (उत्तर प्रदेश) के राजापुर गाँव में माना जाता है। वे रामभक्ति शाखा के सबसे बड़े कवि हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली और विनयपत्रिका हैं। उन्होंने अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं में रचना की। उनका निधन 1623 ई. में काशी में हुआ।

यह अंश रामचरितमानस के बालकांड से लिया गया है। सीता स्वयंवर में श्रीराम द्वारा शिव-धनुष तोड़े जाने पर परशुराम क्रोधित होकर सभा में आते हैं। राम विनम्रता से उत्तर देते हैं, जबकि लक्ष्मण व्यंग्य भरे वचनों से परशुराम का क्रोध बढ़ाते हैं। अंत में विश्वामित्र और राम के शीतल वचन स्थिति शांत करते हैं। यह पाठ चौपाई और दोहा छंद में, अवधी भाषा में है और इसमें वीर तथा रौद्र रस के साथ व्यंग्य की प्रधानता है।

मुख्य बिंदु और व्याख्या (Important Points)

राम के विनम्र वचन

- मूल: “नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥ आयेसु काह कहिअ किन मोही।”
- भावार्थ: राम कहते हैं – हे नाथ! शिवजी का धनुष तोड़ने वाला आपका ही कोई दास होगा। आपकी क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते?

- राम का यह उत्तर उनकी विनम्रता, धैर्य और मर्यादा को दर्शाता है।

परशुराम का क्रोध

- परशुराम कहते हैं कि सेवक वह है जो सेवा करे; शत्रु का काम करके लड़ाई करनी चाहिए। जिसने शिव-धनुष तोड़ा है वह सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है।
- वह व्यक्ति इस सभा से अलग हो जाए, नहीं तो सभी राजा मारे जाएँगे।

लक्ष्मण का पहला व्यंग्य: बहु धनुही तोरी लरिकाई

- लक्ष्मण मुस्कुराकर कहते हैं – बचपन में हमने बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ीं, तब आपने कभी ऐसा क्रोध नहीं किया। इस धनुष पर इतनी ममता क्यों है?
- परशुराम उत्तर देते हैं – हे राजपुत्र! काल के वश होकर तुम सँभलकर नहीं बोल रहे। यह त्रिपुरारि शिव का धनुष है, जो सारे संसार में प्रसिद्ध है।
- लक्ष्मण कहते हैं कि हमें तो सभी धनुष एक समान लगते हैं। पुराने धनुष के टूटने में क्या हानि-लाभ? राम ने तो इसे नया समझकर छुआ ही था कि यह टूट गया, इसमें उनका कोई दोष नहीं।

परशुराम का आत्म-प्रशंसा भरा परिचय

- मूल: "बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥ बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही॥"
- भावार्थ: परशुराम कहते हैं – अरे दुष्ट! तू मुझे केवल मुनि समझता है। मैं बाल ब्रह्मचारी, अत्यंत क्रोधी और संसार भर में प्रसिद्ध क्षत्रिय-कुल का शत्रु हूँ।
- मैंने अपनी भुजाओं के बल से पृथ्वी को राजाओं से कई बार रहित करके ब्राह्मणों को दान कर दिया। मैंने सहस्रबाहु की भुजाएँ काट डालीं।
- "गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर" – मेरा फरसा इतना भयंकर है कि गर्भ के बच्चों को भी नष्ट कर देता है।

लक्ष्मण के तीखे व्यंग्य

- लक्ष्मण कहते हैं – आप बार-बार कुल्हाड़ी दिखाकर फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं।
- "इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥" – यहाँ कोई कुम्हड़े की छोटी बतिया (कच्चा फल) नहीं है जो तर्जनी उँगली देखते ही मुरझा जाए।
- हमारे कुल में देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय पर वीरता नहीं दिखाई जाती, क्योंकि इन्हें मारने से पाप और हारने से अपयश मिलता है।
- "सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु" – वीर युद्ध में पराक्रम दिखाते हैं, अपनी प्रशंसा नहीं करते। कायर ही युद्ध में शत्रु को सामने पाकर अपना बखान करते हैं।
- "मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े। द्विज देवता घरहि के बाढ़े॥" – आपको कभी रणभूमि में सच्चे वीर नहीं मिले; हे ब्राह्मण देवता, आप घर में ही बड़े बने हैं।

विश्वामित्र का हस्तक्षेप

- परशुराम विश्वामित्र से कहते हैं कि यह बालक कुबुद्धि और कुटिल है; इसे समझा लीजिए, नहीं तो यह मारा जाएगा।
- विश्वामित्र कहते हैं कि साधु बालकों के दोष-गुण नहीं गिनते।
- "गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ। अयमय खाँड न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ॥" – विश्वामित्र मन ही मन हँसकर सोचते हैं कि परशुराम को सब हरा ही हरा सूझ रहा है; यह फौलाद की तलवार है, गन्ने की खाँड़ (रस) नहीं; मुनि अब भी नहीं समझ रहे।
- अंत में राम के शीतल वचनों और विश्वामित्र के समझाने से परशुराम का क्रोध शांत होता है।

पात्रों का चरित्र-चित्रण

दीर्घ प्रश्नों में चरित्र-चित्रण अक्सर पूछा जाता है।

पात्र	विशेषताएँ
राम	विनम्र, शांत, धैर्यवान, मर्यादावादी, मृदुभाषी, गुरुजनों का आदर करने वाले

लक्ष्मण	निर्भीक, वाक्पटु, व्यंग्यप्रिय, उग्र स्वभाव, वीर, अन्याय सहन न करने वाले
परशुराम	अत्यंत क्रोधी, आत्म-प्रशंसक, बाल ब्रह्मचारी, क्षत्रिय-कुल द्रोही, पराक्रमी
विश्वामित्र	विवेकी, शांतिप्रिय, राम-लक्ष्मण की शक्ति को जानने वाले

काव्य-सौंदर्य (Kavya Saundarya)

शिल्प-सौंदर्य पर प्रश्नों के लिए।

पक्ष	विशेषता
भाषा	अवधी, तत्सम शब्दों के साथ सरस
छंद	चौपाई और दोहा
रस	वीर और रौद्र रस, व्यंग्य
शैली	संवाद शैली, नाटकीयता
अलंकार	अनुप्रास, उपमा, रूपक, पुनरुक्ति प्रकाश, वक्रोक्ति
मुख्य भाव	क्रोध पर विनम्रता की विजय

लक्ष्मण की व्यंग्य-पंक्तियाँ और उनका अर्थ

पंक्ति	अर्थ
बहु धनुही तोरी लरिकाईं	बचपन में हमने बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ीं, तब क्रोध क्यों नहीं किया
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं	यहाँ कोई कमज़ोर नहीं जो तर्जनी देखकर डर जाए
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू	बार-बार कुल्हाड़ी दिखाकर डराना चाहते हैं
सूर समर करनी करहिं	वीर युद्ध में काम करते हैं, बखान नहीं करते
द्विज देवता घरहि के बाढ़े	आप घर में ही वीर बने हैं, रणभूमि में वीर नहीं मिले

शब्दार्थ (Word Meanings)

शब्द	अर्थ
भंजनिहारा	तोड़ने वाला
केउ	कोई
आयेसु	आज्ञा
रिसाइ	क्रोध करके
अरिकरनी	शत्रु का काम
सहसबाहु	सहस्रबाहु, हज़ार भुजाओं वाला राजा
बिलगाउ	अलग होना
लरिकाईं	बचपन में
धनुही	छोटा धनुष
रघुपति	राम
त्रिपुरारि	शिव

कोही	क्रोधी
महिदेव	ब्राह्मण
परसु	फरसा, कुल्हाड़ी
अर्भक	बच्चा
कुठारू	कुल्हाड़ा
कुम्हड़बतिया	कुम्हड़े का छोटा फल
तरजनी	अँगूठे के पास की उँगली
सुभट	वीर योद्धा
गाधिसूनु	गाधि के पुत्र, विश्वामित्र
अयमय	लोहे का बना
ऊखमय	गन्ने से बना

लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

उत्तर: लक्ष्मण ने कहा कि बचपन में हमने बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ीं, तब आपने क्रोध नहीं किया। हमें सब धनुष एक जैसे लगते हैं। यह धनुष पुराना और कमज़ोर था, राम के छूते ही टूट गया, इसमें उनका कोई दोष नहीं।

प्रश्न 2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं, उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: राम विनम्र, शांत और धैर्यवान हैं; वे स्वयं को परशुराम का दास बताते हैं। लक्ष्मण निर्भीक, उग्र और व्यंग्यप्रिय हैं; वे परशुराम के क्रोध का जवाब तीखे व्यंग्यों से देते हैं।

प्रश्न 3. परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा?

उत्तर: परशुराम ने कहा कि मैं बाल ब्रह्मचारी, अत्यंत क्रोधी और क्षत्रिय-कुल का शत्रु हूँ। मैंने अनेक बार पृथ्वी को राजाओं से रहित कर ब्राह्मणों को दी, सहस्रबाहु की भुजाएँ काटीं, और मेरा फरसा गर्भ के बच्चों को भी नष्ट कर देता है।

प्रश्न 4. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं?

उत्तर: वीर युद्ध भूमि में पराक्रम दिखाते हैं, अपनी प्रशंसा नहीं करते। वे देवता, ब्राह्मण, भक्त और गाय पर हथियार नहीं उठाते। शत्रु को सामने पाकर अपना बखान करना कायरों का काम है।

प्रश्न 5. साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो व्यक्ति का सम्मान बढ़ता है और वह कठिन स्थिति भी शांत कर सकता है। राम इसका उदाहरण हैं, जिन्होंने शक्तिशाली होकर भी विनम्रता से परशुराम का क्रोध शांत किया।

प्रश्न 6. "इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं, जे तरजनी देखि मरि जाहीं" का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लक्ष्मण कहते हैं कि यहाँ कोई कुम्हड़े की कच्ची बतिया जैसा कमज़ोर नहीं है, जो तर्जनी उँगली दिखाने से ही मुरझा जाए। अर्थात हम आपकी धमकियों से डरने वाले नहीं हैं।

प्रश्न 7. "गाधिसूनु कह हृदय हसि ..." पंक्ति में विश्वामित्र क्या सोचते हैं?

उत्तर: विश्वामित्र मन में हँसते हैं कि परशुराम को सब हरा ही हरा दिख रहा है। राम-लक्ष्मण फौलाद की तलवार जैसे हैं, गन्ने की खाँड़ जैसे कमज़ोर नहीं, पर परशुराम यह नहीं समझ रहे।

प्रश्न 8. लक्ष्मण ने परशुराम को "द्विज देवता घरहि के बाढ़े" क्यों कहा?

उत्तर: क्योंकि परशुराम अपनी वीरता का बखान कर रहे थे। लक्ष्मण का व्यंग्य था कि उन्हें कभी रणभूमि में सच्चे वीर नहीं मिले, इसलिए वे घर में ही बड़े वीर बने हुए हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

प्रश्न 1. पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा-सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

- पाठ अवधी भाषा में है, जिसमें तत्सम शब्दों का सुंदर प्रयोग है।
- चौपाई और दोहा छंदों का प्रयोग हुआ है।
- संवाद शैली नाटकीयता पैदा करती है।
- लक्ष्मण के कथनों में व्यंग्य और वक्रोक्ति का सौंदर्य है।
- "कुम्हड़बतिया", "फूँकि पहारू" जैसे लोकजीवन से जुड़े मुहावरे भाषा को जीवंत बनाते हैं।
- अनुप्रास, उपमा, रूपक और पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार हैं।
- वीर और रौद्र रस का सुंदर परिपाक है।

प्रश्न 2. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद का सार लिखिए।

- सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिव-धनुष तोड़ने पर परशुराम क्रोधित होकर आते हैं।
- राम विनम्रता से कहते हैं कि धनुष तोड़ने वाला आपका ही कोई दास होगा।
- परशुराम धनुष तोड़ने वाले को शत्रु बताते हैं; लक्ष्मण व्यंग्य करते हैं कि बचपन में बहुत धनुहियाँ तोड़ीं।
- परशुराम अपनी वीरता और फरसे का बखान करते हैं; लक्ष्मण कहते हैं कि वीर बखान नहीं करते, यहाँ कोई कुम्हड़बतिया नहीं।
- विश्वामित्र और राम के शीतल वचनों से परशुराम का क्रोध शांत होता है।

प्रश्न 3. लक्ष्मण और परशुराम के संवाद से हमें क्या सीख मिलती है?

- अहंकार और क्रोध व्यक्ति को विवेकहीन बना देते हैं, जैसा परशुराम के साथ हुआ।
- अपनी प्रशंसा स्वयं करना वीरों का गुण नहीं।
- तीखा व्यंग्य स्थिति को और बिगाड़ सकता है।
- राम का उदाहरण बताता है कि विनम्रता और धैर्य से बड़े से बड़ा क्रोध शांत किया जा सकता है।
- शक्ति के साथ विनम्रता ही सच्ची महानता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs with Answers)

1. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद रामचरितमानस के किस कांड से लिया गया है?

(क) अयोध्याकांड (ख) बालकांड (ग) सुंदरकांड (घ) लंकाकांड

उत्तर: (ख) बालकांड

2. तुलसीदास का जन्म कहाँ माना जाता है?

(क) राजापुर (ख) रुनकता (ग) काशी (घ) मथुरा

उत्तर: (क) राजापुर

3. "नाथ संभुधनु भंजनिहारा, होइहि केउ एक दास तुम्हारा" किसने कहा?

(क) लक्ष्मण (ख) विश्वामित्र (ग) राम (घ) जनक

उत्तर: (ग) राम

4. परशुराम ने धनुष तोड़ने वाले को किसके समान शत्रु बताया?

(क) रावण (ख) सहस्रबाहु (ग) बालि (घ) कंस

उत्तर: (ख) सहस्रबाहु

5. "बहु धनुही तोरी लरिकाई" किसका कथन है?

(क) राम (ख) लक्ष्मण (ग) परशुराम (घ) विश्वामित्र

उत्तर: (ख) लक्ष्मण

6. परशुराम स्वयं को किसका शत्रु बताते हैं?

(क) ब्राह्मण कुल (ख) क्षत्रिय कुल (ग) देवता (घ) ऋषि

उत्तर: (ख) क्षत्रिय कुल

7. 'कुम्हड़बतिया' का अर्थ है

(क) कद्दू का बड़ा फल (ख) कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल (ग) बत्ती (घ) दीपक

उत्तर: (ख) कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल

8. 'गाधिसूनु' किसे कहा गया है?

(क) परशुराम (ख) विश्वामित्र (ग) जनक (घ) वशिष्ठ

उत्तर: (ख) विश्वामित्र

9. पाठ की भाषा कौन-सी है?

(क) ब्रज (ख) अवधी (ग) खड़ी बोली (घ) भोजपुरी

उत्तर: (ख) अवधी

10. लक्ष्मण के अनुसार वीर क्या करते हैं?

(क) अपना बखान करते हैं (ख) युद्ध में पराक्रम दिखाते हैं (ग) गायों पर वार करते हैं (घ) धमकी देते हैं

उत्तर: (ख) युद्ध में पराक्रम दिखाते हैं

त्वरित पुनरावृत्ति (Quick Revision)

- कवि: तुलसीदास (1532–1623), राजापुर, रामभक्ति शाखा।
- रचनाएँ: रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका।
- अंश: रामचरितमानस, बालकांड; सीता स्वयंवर, शिव-धनुष भंग।
- राम: "होइहि केउ एक दास तुम्हारा" – विनम्रता।
- लक्ष्मण: बहु धनुही तोरी लरिकाईं; कुम्हड़बतिया; सूर समर करनी करहिं; द्विज देवता घरहि के बाढ़े।
- परशुराम: बाल ब्रह्मचारी, अति कोही, क्षत्रियकुल द्रोही, सहस्रबाहु की भुजाएँ काटीं।
- विश्वामित्र: "अयमय खाँड न ऊखमय"।
- भाषा अवधी, छंद चौपाई-दोहा, रस वीर-रौद्र, संवाद शैली।

सारांश (Summary)

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में शिव-धनुष टूटने पर क्रोधित परशुराम सभा में आते हैं। राम विनम्रता से उत्तर देते हैं, जबकि लक्ष्मण व्यंग्य भरे वचनों से परशुराम के क्रोध और आत्म-प्रशंसा की हँसी उड़ाते हैं। परशुराम अपनी वीरता, ब्रह्मचर्य और फरसे की भयंकरता का बखान करते हैं।

विश्वामित्र मन ही मन परशुराम की नासमझी पर हँसते हैं और अंत में राम के शीतल वचनों से स्थिति शांत होती है। यह प्रसंग क्रोध पर विनम्रता की विजय और सच्ची वीरता का संदेश देता है।

परीक्षा टिप्स (Exam Tips)

- चरित्र-चित्रण (राम, लक्ष्मण, परशुराम) पर दीर्घ प्रश्न अक्सर आते हैं।
- लक्ष्मण की व्यंग्य-पंक्तियों का अर्थ ज़रूर याद करें।
- काव्य-सौंदर्य में भाषा, छंद और रस लिखना न भूलें।
- पद्यांश आधारित प्रश्नों में पंक्ति का अर्थ और अलंकार पूछे जाते हैं।
- उत्तर में मूल चौपाई की पंक्ति उद्धृत करें।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)

यह पाठ किस ग्रंथ से है?

रामचरितमानस के बालकांड से।

परशुराम क्रोधित क्यों हुए?

क्योंकि सीता स्वयंवर में राम ने उनके गुरु शिव का धनुष तोड़ दिया था।

पाठ में कौन-सा रस है?

वीर और रौद्र रस, साथ में व्यंग्य।

क्या यह पाठ 2026-27 में है?

हाँ, यह CBSE हिंदी A (क्षितिज भाग 2) का दूसरा पाठ है।

PDF कैसे मिलेगा?

ऊपर दिए लिंक से बिना साइनअप मुफ़्त PDF डाउनलोड करें।

निष्कर्ष (Conclusion)

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद हमें सिखाता है कि शक्ति के साथ विनम्रता ही सच्ची महानता है। संवाद सार, व्यंग्य-पंक्तियों की तालिका और चरित्र-चित्रण दोहराकर इस पाठ में पूरे अंक प्राप्त करें।

और नोट्स (More Notes): Class 10 Hindi Kshitij Chapter 1: सूरदास – पद notes | Class 10 Hindi Kshitij Chapter 3: आत्मकथ्य notes | All Class 10 Hindi notes

लेखक परिचय (Author Bio): ये नोट्स Nextoper Editorial Team ने तैयार और जाँचे हैं – CBSE हिंदी शिक्षकों का समूह, जो NCERT पाठ्यपुस्तक और पिछले बोर्ड प्रश्नपत्रों के पैटर्न के आधार पर पाठ-वार नोट्स बनाते हैं।

अद्यतन जानकारी (Freshness Note): ये नोट्स NCERT कक्षा 10 की हिंदी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग 2 (Reprint 2026-27, CBSE Hindi A) और 2026-27 सत्र के CBSE पाठ्यक्रम पर आधारित हैं। अंतिम जाँच: 10 नवंबर 2026।